मिर्गी : कारण और निवारण

Epilepsy : Cause and Cure

डॉ. नगेन्द्र शर्मा

न्यूरोसर्जन

SCIENTIFIC PUBLISHERS

मिर्गी: कारण एवं निवारण

Epilepsy: Cause and Cure

डॉ. नगेन्द्र शर्मा
न्यूरोसर्जन

साईन्टिफिक
पब्लिशर्स

प्रकाशक

साईन्टिफिक पब्लिशर्स (इण्डिया)

5–ए, न्यू पाली रोड़, पो.बो. नं. 91
जोधपुर – 342 001 (राज.)
टेलिफोनः 0291–2433323
E-mai: info@scientificpub.com
Web: www.scientificpub.com

© 2011, लेखक और प्रकाशक

समस्त अधिकार आरक्षित है इस प्रशासन अथवा इसमें प्रस्तुत रूपान्तरित संक्षिप्त अनुवादित या भण्डारित पुनः प्राप्य प्रणाली, कम्प्यूटर प्रणाली, छाया चित्रांकन या अन्य पद्धतियों में अथवा किसी भी प्रारूप में संचारित अथवा किसी साधन से इलेक्ट्रॉनिक यान्त्रिकी प्रतिलिपीकरण, ध्वनि अंकन अथवा अन्यथा से प्रकाशन की पूर्व लिखित अनुमति के बिना नहीं की जा सकेगी।

अस्वीकरण – यद्यपि प्रत्येक प्रयास त्रुटियाँ और लोगों को टालने का है यह प्रकाशन इस समझ–बूझ पर है कि न तो सम्पादक (या लेखक) ना ही प्रकाशक ना ही मुद्रक, किसी भी रूप से किसी व्यक्ति के प्रति जिम्मेदार नहीं हो सकेगें। इस प्रकाशन में यदि किसी त्रुटि या लोप के लिये अथवा उस किसी कार्यवाही के लिये ही जो इस कार्य के आधार पर की जाये। कोई असावधानी की विसंगति प्रकाशक के ध्यान में भवि य के संस्करण में उसके सुधार के लिये लायी जा सकेगी यदि उसका प्रकाशन हो।

व्यापार चिन्ह सूचना – उत्पादन अथवा निगमन नाम, व्यापार चिन्ह अथवा पंजीकृत व्यापार चिन्ह हो सकेगें और उसका उपयोग उल्लंघन, के इरादे के बिना केवल पहचान या स्प टीकरण के लिये किया जा सकेगा।

ISBN: 978-81-72337-49-0
eISBN: 978-93-87869-14-1

भारत में मुद्रित

उद्देश्य

मिर्गी रहित हो जीवन सारा
यही है उद्देश्य हमारा

सादर समर्पण

अपने पिता तुल्य स्व. पण्डित श्रीधर शास्त्री, मुंबई
एवं
माता तुल्य श्रीमती रामेश्वरी देवी को
समर्पित
जिनके प्रेरणात्मक वैचारिक व
मानसिक सहयोग के बिना
यह सफर तय नहीं
कर सकता था।

मानव सेवा करना ही मानव का धर्म है

डॉ. नगेन्द्र शर्मा को दूसरी पुस्तक "मिर्गीः कारण व निवारण" हेतु मेरी शुभकामनाएँ।

डॉ. नगेन्द्र शर्मा ने पश्चिमी राजस्थान को मिर्गी रोग से मुक्त होने का सपना देखा है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उनका सपना पूरा हो। अपने सपने को पूरा करने के लिए डॉ. शर्मा पिछले 13 वर्षों से मिर्गी के निःशुल्क उपचार में लगे हैं। उपचार के साथ ही रोग के बारे में लोगों को अधिक से अधिक जानकारी हो इसके लिए किताबें लिखने का महनीय कार्य भी कर रहे हैं। जब उद्देश्य अच्छा हो, मानव हितकारी हो तो लक्ष्य तक पहुंचने में हमें कहीं न कहीं से मदद जरूर मिल जाती है। डॉ. नगेन्द्र शर्मा का इस मुहिम में जिन लोगों ने साथ दिया वे भी प्रशंसा के हकदार है। मनुष्य की सेवा करना ही मनुष्य का धर्म होता है। और उस धर्म का निर्वाह डॉ. नगेन्द्र शर्मा भली भाँति कर रहे हैं। डॉ. नगेन्द्र शर्मा अपने चिकित्सकीय फर्ज को जिस इमानदारी एवं त्याग के साथ निभा रहे हैं वह प्रशंसनीय है। एक बार पुनः मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

डॉ. एस.एन. भगवती
डायरेक्टर व चीफ न्यूरोसर्जन,
न्यूरोसर्जरी विभाग,
मुंबई अस्पताल, मुंबई

डॉ. शर्मा के प्रयासों का सार्थक परिणाम

आज से लगभग 24 वर्ष पहले की बात है कि मेरे पति डॉ. नगेन्द्र शर्मा ने मुंबई के के.ई.एम. अस्पताल से M.C.h. किया और जोधपुर अपने घर चले आये। और प्रैक्टिस आरम्भ की। उस समय डॉ. नगेन्द्र के पास इलाज करवाने के लिए गाँव के मरीज ही अधिकांश आते थे जिनमें से भी कई गरीब व अशिक्षित होते थे। एक दिन एक वृद्ध ग्रामीण मरीज आया। डॉ. नगेन्द्र ने उसे जांचा, पर्ची पर दवा लिख दी। दोपहर को मैं किसी काम से घर से बाहर निकली तो देखा वह ग्रामीण सिर झुकाएं पेड़ के नीचे बैठा है। मुझे आश्चर्य हुआ और मैंने पूछा बाबा यहां क्यूं बैठे हो? जबाब आया बस का किराया चुकाकर 200 रूपये बचे थे। 100 रूपये साहब की फीस के दे दिये। दवाई के लिए पैसे पूरे नहीं है। गांव चला गया तो दवा के लिए लौट नहीं पाउंगा। बस भाड़ा लगेगा। काम खोटी होगा। क्या करूं यही सोच रहा हूं। वृद्ध के बोलों में चिन्ता और गरीबी का कंपन साफ सुनाई दे रहा था। मैं भीतर गई कुछ रूपये लाई और वृद्ध को दिये। रूपये देखकर उसकी आंखों से अविरल आंसू बहने लगे। उसने हजारों आशीषें दीं और चला गया।

उस दिन इस संकल्प की नींव पड़ गई कि गरीब रोगियों का जितना बन पड़े उतना मुफ्त इलाज करना है। सारा आगा पीछा सोच कर सन् 1999 में डॉ. नगेन्द्र शर्मा ने निःशुल्क मिर्गी शिविर

लगाने आरम्भ किये। पहले शिविर में लगभग 75 मरीज आये और आज 150 वें शिविर में 272 मरीज आये हैं। ये मरीज राजस्थान के अलावा गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश आदि सभी जगहों से आते हैं। सन् 1999 से लेकर आज तक बिना नागा हर महीने की 30 तारीख (28 फरवरी) को निःशुल्क मिर्गी शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

मिर्गी रोग के बारे में लोग अधिक से अधिक जागरूक हों इसलिए डॉ. नगेन्द्र शर्मा ने कई पेम्पलेट, फोल्डर छपवाये, गाँव में बंटवाएं। मौखिक प्रचार प्रसार किया। यह बताने के लिए कि मिर्गी एक रोग है जो नियमित दवा खाने से पूरी तरह से ठीक हो जाता है। जबकि गाँवों में मिर्गी को रोग नहीं बल्कि "भूत आना" कहते हैं। जिसे भोपे व तांत्रिक उतारते हैं। भूत उतारने की प्रक्रिया बड़ी खतरनाक होती हैं, मिर्ची की धूनी लगाकर या तालाब के पानी में डुबोकर, कोड़े लगाकर, या लोहे की सांखलों से शरीर को पीटकर। इस तरह गाँव में यह तथाकथित भूत जिसे लग जाता है उसका जीवन नर्क के समान हो जाता है। दवा के अभाव में रोग बढ़ता चला जाता है। और एक स्थिति ऐसी आती है जब मरीज को जंजीरों में झकड़ कर रखना पड़ता है। सामान्य इन्सान का जीवन असामान्य हो जाता है इतना असामान्य कि जिसे जीवन कहने में ही शर्म आये।

डॉ. नगेन्द्र शर्मा के प्रचार–प्रसार व इलाज का फायदा यह हुआ कि लोग इलाज करवाने दूर दूर से आने लगे और वे ठीक होने लगे। भोले–भाले ग्रामीणों के लिए यह सब किसी दैवीय चमत्कार से कम नहीं था। ऐसे में अगर डॉ. नगेन्द्र शर्मा को वे लोग "भूत भगाने वाले डॉक्टर" के नाम से जानने लगे तो कोई बड़ी बात नहीं।

डॉ. शर्मा ने अपने प्रयासों का सार्थक परिणाम देखकर सन् 2005 में सरल हिन्दी भाषा में मिर्गी पर एक किताब लिखी जिसका

नाम "मानव मस्तिष्क और मिर्गी" था। यह किताब आम लोगों द्वारा खूब सराही और पढ़ी गई, और मिर्गी रोगियों के लिए फायदेमंद साबित हुई इसे राजस्थान सरकार का सर्वोच्च "हिन्दी सेवा सम्मान" मिला। अब मिर्गी पर यह दूसरी पुस्तक "मिर्गी : कारण और निवारण" लिखी है। इस किताब में डॉ. शर्मा ने मिर्गी रोग की विस्तृत जानकारी के साथ ही मिर्गी को कई पहलुओं से देखने – दिखाने का प्रयास किया है। जिस कारण यह किताब और अधिक पठनीय और उपयोगी हो गई है।

मिर्गी रोग से जुड़ी कई भ्रान्तियों का निवारण कर मिर्गी को निर्मूल करने के लिए कृतसंकल्प डॉ. नगेन्द्र शर्मा का कहना है कि जीवन के आखिरी वक्त तक मिर्गी रोगियों की सेवा करूंगा। वह सेवा चाहे मुफ्त उपचार के रूप में तो चाहे साहित्य के द्वारा। मैं सदा करता रहूंगा। यही कहूंगा कि **"मिर्गी रहित हो जीवन सारा, यही है उद्देश्य हमारा"।**

डॉ. पद्मजा शर्मा
15 बी, पंचवटी कॉलोनी,
जोधपुर

100 वां निःशुल्क मिर्गी रोग शिविर समारोह एवं मिर्गीः समस्या एवं समाधान सेमिनार का उद्घाटन समारोह में जोधपुर के पूर्व नरेश गजसिंहजी, आयुर्वेद विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बनवारीलाल गौड़, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. लोकेन्द्र शेखावत एवं गणमान्य अतिथि।

स्वामी सत्यमित्रानन्दजी महाराज से **"नर नारायण सेवा"** सम्मान ग्रहण करते हुए डॉ. नगेन्द्र शर्मा

पुलिस उपायुक्त श्री हरिप्रसादजी शर्मा द्वारा
मिर्गी शिविर का निरीक्षण

मिर्गी शिविर संयोजक राजकुमार शर्मा द्वारा पुलिस उपमहानिरीक्षक
श्री गिरधारीलाल शर्मा का मिर्गी शिविर में स्वागत करते हुए
साथ में डॉ. नगेन्द्र शर्मा

"मानव मस्तिष्क एवं मिर्गी" पुस्तक का विमोचन करते हुए पूर्व शिक्षामंत्री श्री घनश्याम तिवाड़ी एवं गणमान्य अतिथि

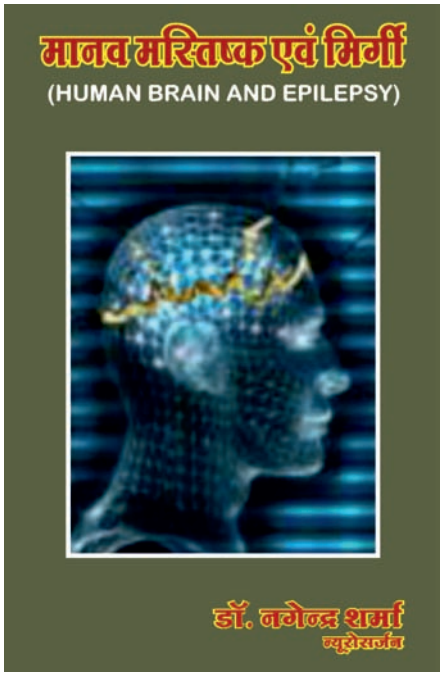

डॉ. नगेन्द्र शर्मा द्वारा लिखित पुस्तक **"मानव मस्तिष्क एवं मिर्गी"**

राजस्थान राज्य का सर्वोच्च प्रथम **"हिन्दी सेवा सम्मान"** पुरुस्कार
पूर्व शिक्षामंत्री घनश्याम तिवाडी से ग्रहण करते हुए डॉ. नगेन्द्र शर्मा

549 वाँ जोधपुर स्थापना दिवस पर
"राव जोधा स्मृति पुरस्कार – मारवाड़ रत्न"
ग्रहण करते हुए डॉ. नगेन्द्र शर्मा

अपनी बात

यह मिर्गी रोग पर मेरी दूसरी पुस्तक है। पहली पुस्तक **"मानव मस्तिष्क और मिर्गी"** को पाठकों का अपार प्यार मिला तो उत्साहित होकर मैंने यह दूसरी पुस्तक लिखी है। जिसका नाम है **"मिर्गी : कारण और निवारण"** पहली पुस्तक के कई महत्त्वपूर्ण आलेख इसमें हैं तो कई अध्याय नये भी जोड़े हैं। पहली पुस्तक में जो कुछ छूट गया था वह इस पुस्तक में दिया गया है। इस पुस्तक में मैंने मिर्गी रोग के कारण व निवारण का विस्तृत वर्णन किया है। मिर्गी रोग में विभिन्न पद्धतियों द्वारा किये जा रहे उपचारों पर विस्तृत जानकारी देते हुए शल्य चिकित्सा एवं मिर्गी, अत्याधुनिक औषधियों व अन्य पद्धतियों द्वारा किये जा रहे उपचारों की जानकारी आम पाठक तक पहुंचाने का प्रयास किया है।

हमने अंधविश्वासें के चक्रव्यूह को तोड़ने के लिए जन जागरण का अभियान भी चलाया। बहुत मुश्किल था यह सब लेकिन मनुष्य जीवन के महत्व और समाज के सरोकारों को समझने वाले कई सुधी आत्मीय हमारे साथ जुड़ते गये। अवश्य ही उन्हीं की बदौलत मुझे आज यहां तक पहुंचने में सफलता मिल पाई है।

ऐसे बहुत सारे मिर्गी रोग से जुड़े पहलू हैं जिन पर पहले किसी किताब में चर्चा नहीं हुई है। अतः मिर्गी रोग के बारे में जानकारी देते हुए यह कृति एक सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया भी शुरू कर सकेगी, ऐसा मेरा विश्वास है। समाज जागे और मिर्गी के विरूद्ध मुहिम में शामिल हो, यही मेरा विनम्र प्रयास है।

जिनके सहयोग ने इस प्रयास को सफल बनाने में मुख्य भूमिका निभाई उन सभी के लिए मैं हृदय से आभार ज्ञापित करता हूँ। मेरी पत्नी डॉ. पद्मजा शर्मा जिनका सहयोग व सोच लगातार मुझे प्रेरित करते रहे। डॉ. शैलेन्द्र जैन (कृतिः मिर्गी एक मस्तिष्क रोग तथ्य और उपचार) तथा डॉ. ओरिन डेविंस्की (कृतिः क्लीनिकल सिंपोजिया) का भी आभारी हूँ। इस पुस्तक की लेजर टाईपसेटिंग करने वाले भाई राजेश ओझा जिनके लगातार अथक प्रयास से यह पुस्तक, पुस्तक का स्वरूप धारण कर सकी। राजकुमार शर्मा, घनश्याम ओझा, हस्तीमल सारस्वत का भी इस पुस्तक में सहयोग सराहनीय हैं। मेरी पुत्री एडवोकेट अद्वैता शर्मा, श्वेता शर्मा एवं पुत्र पियूष शर्मा जिनके समय में कटोति कर मैंने यह पुस्तक लिखने का प्रयास किया। उनकी किसी तरह की शिकायत नहीं करने के लिए भी मैं उनका आभारी हूँ। 12 वर्षों से मेरे साथ जुड़े मिर्गी शिविर संयोजक कानाराम पूनिया को धन्यवाद दिये बिना मैं अपना कर्तव्य पूरा नहीं समझता।

पुस्तक की साज–सज्जा एवं कवर डिजाइन के लिए भाई राजकुमार शर्मा का सराहनीय सहयोग मिला उसके लिए मैं इनका आभारी हूँ।

अन्त में मैं श्री पवनकुमार शर्मा, साईन्टिफिक पब्लिशर्स (इंडिया), जोधपुर का भी हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ कि इनके प्रयासों से ही बहुत कम समय में यह पुस्तक छपकर तैयार हुई।

मुझे उम्मीद है इस पुस्तक से भी पाठकों को लाभ पहुंचेगा, उन्हें लाभ हुआ तो मैं अपनी पुस्तक को सफल मानूंगा।

डॉ. नगेन्द्र शर्मा
15 बी, पंचवटी कॉलोनी,
जोधपुर

BIO-DATA

Name	:	**DR. NAGENDRA SHARMA**
Father's Name	:	Shri Paramanand Ji Sharma
Address	:	15-B, Panchwati Colony Opp. Senapati Bhawan Jodhpur (Raj.) INDIA
Phone	:	0291-2511500, 2514500, Mobile : 94141-21188
Date of Birth	:	11th March, 1954
Nationality	:	Indian
Marital Status	:	Married with Dr. Padmaja Sharma Principal, Mahesh Mahila Mahavidhalaya, Jodhpur.
Academic Records	:	**M.Ch. (Neurosurg.)** from Seth G.S. Medical College, K.E.M. Hospital, Bombay in 1987 with 1st **attempt**.
	:	**M.S. (Gen. Surg.)** from Dr. S.N. Medical College, Jodhpur in 1983 with 1st attempt.
	:	**M.B.B.S.** from Dr. S.N. Medical College, Jodhpur in 1978 having all 3 years in 1st attempt.
	:	**Hr. Secondary** from Board of Sec. Edu. Raj., Ajmer with Science Group in 1971 with 71%.
	:	**Secondary** from Board of Sec. Edu. Raj., Ajmer with Science Group in 1970 with 74%.
Registration No.	:	56715 MMC.

Professional Experience	:	27 Year
Teaching Experience	:	06 Years
Present Occupation	:	Consultant Neurosurgeon
Papers Published	:	08
Papers Presented	:	03

TEACHING EXPERIENCE:

1. 3 Years	:	As a Resident in the Deptt. of General Surgery, M.G. Hospital, Jodhpur, while completing M.S. Gen. Surgery.
2. 1 & ½ years	:	As a Registrar in the Deptt. of Neurosurgery, K.E.M. Hospital, Bombay - 12.
3. 6 months	:	Senior Resident at Bombay Hospital, Mumbai (under Dr. S.N. Bhagawati)
4. 1 year	:	As an Assistant Professor in the Deptt. of Neurosurgery, K.E.M. Hospital, Bombay - 12

RESEARCH EXPERIENCE:

1. Thesis submitted for MS (Gen. Surg.) with following title : **"Management of Chronic Empyema with special reference to Irrigation and Kanamycin Instillation."**
2. Thesis submitted for M.Ch. (Neurosurgery) with following title: **"Cranopharyngioma - A Case Study of 116 cases".**

PAPERS PUBLISHED :

1. Enterolithiasis - a case report.
2. Terminal ileal perforation - a case study of 100 cases.
3. Botryod sarcoma of urinary bladder - case report of 3 cases.

4. Management of chronic empyema with special reference to irrigation and Kanamycin instillation.
5. Trichobeozar of stomach - a report of 3 cases.
6. Vertebro-basilar insufficiency associated with long standing ankylosing spondylitis.
7. Calcury an indegenous drug for management of ureteric stones - a study of 25 cases.
8. Atlanto-axial subluxation associated with long standing ankylosing spondylities.

CASES PRESENTED IN CONFERENCES :

1. Management of Craniopharyngioma through transsphenoidal route, paper read in International Conference of Neuro-surgery head at New Delhi.
2. Various modes of presentation and their management of 60 cases of Uretheral stones. Paper read in IMA Conference held at Jodhpur.
3. Management of chronic empyema with special reference to irrigation and Kanamycin instillation. Paper presented in Rajasthan chapter of Tuberculosis and chest diseases held at Jodhpur.

SPECIAL FIELD OF INTEREST IN NEUROSURGERY :

Along with all neurosurgical work :

- Fluorotic spine and its complication is a special field of Surgery.
- Since Western Rajasthan is highest fluorotic zone in India. The unnumerable persons are suffering from spinal compression and surgery is only the mode of treatment.
- Maximum number of cases operated (more than 80 cases so far).

CREATION :

- A Book in Hindi language **'मानव मस्तिष्क एवम् मिर्गी'** which has proved a very good guide to general public to understand about this disease.

- To aware urban and rural public regarding various neurosurgical diseases multiple articles has been written in news papers, leading magazines of India and also through Electronic media and All India Radio.

AWARDS :

- Prestigious award of Govt. of Rajasthan **'हिन्दी सेवा सम्मान'** awarded for the creation on book in epilepsy in national language.
- **'Rav Jodha Smriti Puruskar'** (**मारवाड़ रत्न**) by Mehrangarh Museum Trust, Jodhpur.
- **'Samaj Ratna'** by Idd Millanudabi Society- Social Society of Muslim Community for rendering services to poor persons.
- **'Veer Durga Das Rathore Samiti Awards'** honour for rendering free services to poor and rural public of Western Rajasthan.
- **'Jodhpur Gaurav Alankaran'** by Municipal Corporation, Jodhpur for free Epilepsy Camps for Western Rajasthan's patients.
- **'Marudhara Media Fellow'** by Marudhara Patrakar Sansthan for writing the useful articles of Medical Science in news papers.
- **श्मानवता के प्रति समर्पित नरनारायण सेवा सम्मान by "अन्तरराष्ट्रीय समन्वयक परिवार (महामण्डलेश्वर सत्यमित्रानन्द जी)"**
- Honoured by Times of India by Printing an Article named **'An Healing Touch'** in Prestigious book 'Foot Print'.
- **श्वृक्ष बन्धु पुरस्कारश** for providing good services in field of plantation and awareness regarding pollution oriented diseases and its prevention.
- **'Marwar Ratan** by Marwar Group for rendering him services to society, and educating peoples for health awareness programme.
- **'Media Fellow'** by Media Associates for helping in writing in media on health problem honoured by Hon'ble Health Minister Dr. Digamber Singh.

- Honoured by **District Collector** on 15th Aug. for rending services to poor and rural persons.
- **'Health Excellence Award'** by Himalaya Pharma for providing excellent service in field of Neurosurgery.

SPECIAL ACTIVITIES :

Epilepsy Awareness Programme :

1. By conducting free epilepsy camp on every 30th of Month since Feb. 99 to the today (Total 93 free camps was organised so far).
2. Distributing free medicine Epilepsy literature in Hindi and Regional language and Lectures at Rural and District level through NGO.
3. Educating peoples through Newspaper, Magazine, Radio and Electronic Media

MEMBER :

- Govt. of Rajasthan has appointed as a Member - Board of Management in **Rajasthan Health University** for 3 years.
- Life member of **NSI** and **Paediatric Neurosurgical Society of India**.

REFERENCES :

Dr. S.N. Bhagwati
Cons. Neurosurgeon
Director of Neuroscience
Department of Neurosurgery
Bombay Hospital
Bombay - 20

Dr. R.D. Nagpal
Cons. Neurosurgeon
Jaslok Hospital
Bombay – 26

अनुक्रमणिका

	उद्देश्य	iii
	सादर समर्पण	iv
	मानव सेवा करना ही मानव धर्म है	v
	डॉ. शर्मा के प्रयासो का सार्थक परिणाम	vii
	कलर पेज	xi
	अपनी बात	xvi
	बायोडाटा	xvii
1	मिर्गी रोग क्या है?	1
2	मिर्गी रोग कब से?	4
3	मिर्गी रोग की व्यापकता	6
4	मानव मस्तिक की संरचना	8
5	मिर्गी रोग के कारण	12
6	मिर्गी रोग के लक्षण एवं प्रकार	16
7	मिर्गी के विभेद और समलक्षणीय व्याधियां	27
8	मिर्गी रोग के निदान	31
9	मिर्गी रोग के उपचार	46
10	औषधीय विधि द्वारा उपचार	50
11	शल्य चिकित्सा विधि द्वारा मिर्गी का उपचार	56

12	अन्य पद्धतियों द्वारा उपचार	61
13	मरीज की मानसिक व सामाजिक सोच में परिवर्तन द्वारा उपचार	63
14	मिर्गी रोग का दौरा पड़ने पर क्या करें और क्या ना करें	67
15	मिर्गी रोग के बारे में भ्रांतियाँ	73
16	मिर्गी रोग के बारे में सामाजिक सोच	75
17	क्यों घातक है मिर्गी रोग समाज के लिए	81
18	मिर्गी रोग की रोकथाम एवं बचाव	83
19	मिर्गी रोगियों के मृत्यु के कारण	85
20	मिर्गी रोग : पश्चिमी राजस्थान के सन्दर्भ में	86
21	मिर्गी रोग की रोकथाम – चिकित्सक, समाज व सरकार का दायित्व	90
22	निःशुल्क मिर्गी रोग कैम्प और मेरे अनुभव	94
23	मिर्गी रोग में काम आने वाली दवाईयां	101
24	150 निःशुल्क शिविरों की मुख्य उपलब्धियाँ	103
25	150 निःशुल्क शिविरों के आँकड़े	105

1

मिर्गी रोग क्या है?

मिर्गी कोई बीमारी नहीं है। यह शारीरिक तंत्रिकीय गड़बड़ी (न्यूरोलॉजिकल डिसऑर्डर) का चिह्न या लक्षण है।

हमारा मस्तिष्क शरीर का अत्याधिक जटिल एवं संवेदनशील अंग है। यह हमारे सभी कार्यकलापों का नियंत्रक एवं संचालक है। यह हमारी प्रेरक गतिविधियों, संवेदनाओं, विचारों तथा भावनाओं का नियंता है। यह स्मरण स्थल है और शरीर के अनैच्छिक अंतः कार्यों जैसे हृदय तथा फेफड़ों की गतिविधियों को संचालित करता है। मस्तिष्क की कोशिकाएँ एक साथ मिलकर कार्य करती हैं और विद्युत संकेतों के माध्यम से परस्पर सम्पर्क करती रहती हैं। कभी–कभी ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती हैं कि किसी कोशिका समूह से असाधारण मात्रा में विद्युत प्रवाह पैदा होता है, जिसकी परिणति दौरा पड़ने के रूप में होती है। दौरा किस तरह का है, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि मस्तिष्क के किस भाग से असाधारण विद्युत प्रवाह हुआ है।

मस्तिष्क असंख्य कोशिकाओं का बना एक ऐसा महत्त्वपूर्ण अंग है जो शरीर की प्रायः सभी ऐच्छिक या अधीन और अनैच्छिक या पराधीन क्रियाओं को नियंत्रित करता है। ये कोशिकाओं के समूह भिन्न–भिन्न कार्य संपादित करने के लिए

उत्तरदायी होते हैं। निरन्तर चलने वाली चायपचय की रासायनिक क्रिया के फलस्वरूप इन कोशिकाओं के कुछ विशिष्ट समूह सामूहिक रूप से अनियंत्रित होकर एकाएक अपेक्षाकृत अधिक विद्युत उत्सर्जन करने लगते हैं जिससे मस्तिष्क के एक भाग से नियंत्रित शरीर के हिस्से में ऐठन, झटके या असामान्य लक्षण प्रतिबिम्बित होने लगते हैं। अंगों में हलचल, थरथराहट अथवा असामान्य क्रियाएं आरम्भ हो जाती हैं। मरीज अजीब–सा महसूस करने लगता है। इस बदली हुई संवेदनशीलता या बहाव के कारण रोगी की सामान्य क्रियाएं एवं व्यवहार प्रभावित हो जाते हैं।

सामान्य अवस्था में मस्तिष्क की कोशिकाओं में उपस्थित विश्रामी कला विभव – 60 माइक्रोवोल्ट के लगभग होता है, पर किन्हीं विशिष्ट स्थितियों में ये विद्युत तरंगें उत्सर्जित करने लगती हैं जिसका परिणाम कोशिकाओं से संबंधित अंगों में ऐठन या झटके आना, मानसिक अस्थिरता की स्थिति आदि उपर्युक्त असामान्य लक्षण उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार अनियंत्रित कोशिकाओं से अनावश्यक रूप से होने वाले विद्युत उत्सर्जन से शरीर में उत्पन्न असामान्य क्रिया–प्रतिक्रियाओं को दौरा कहते हैं। और बार–बार इस प्रकार आने वाले दौरों को मिर्गी कहा जाता है। मस्तिष्क एक प्रकार का मुख्य नियंत्रक है जो अपनी पूरी क्षमता से समस्त शारीरिक क्रियाओं–प्रतिक्रियाओं व विभिन्न अंगों की हलचल को इस प्रकार निर्देशित व नियंत्रित करता है कि समूचा शरीर सुचारू रूप से अचेतना या चेतनावस्था में कार्यरत रहता है परन्तु कभी– कभी कुछ कोशिका समूह एकाएक अत्यधिक सक्रिय होकर विद्युतीय तरंगें उत्सर्जित करने लगती हैं। ये कोशिकाएँ या तो आनुवांशिक तौर पर इस तरह के अनिंयत्रित क्रिया–कलाप के लिए संवेदनशील होती हैं अथवा किसी आन्तरिक या बाह्य चोट के फलस्वरूप ऐसा रूख अपनाती हैं, जिसके फलस्वरूप शरीर के भाग विशेष में अतिक्रियात्मकता दृष्टिगोचर होती है। इन मस्तिष्क कोशिकाओं को नियंत्रित रखने